मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • संवत अंक ११० मई -२०२१

पूज्य श्री नरनारायण देव पितांबरी महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.



आडलसर (मूली रोड) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



रणुजेला (झाडी प्रवेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





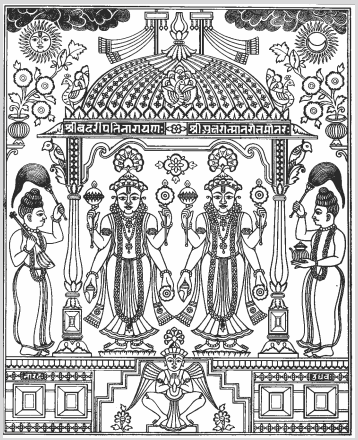
रामनगर (कलोल) मंदिर के स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



रामनवमी अवसर भवन (कलपुर) श्री घनश्याम महाराज के अभिषेक के बाद आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



कर्मशक्ति (गरोडा) मंदिर के रजत जयंती पर आशीर्वाद तथा दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र



वर्ष - १६ ● अंक : १९० ● मई-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, ०५
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

०३. अहमदाबाद मंदिर के प्रेरक स्वयं भगवान श्रीस्वामिनारायण ०६

०४. धमासणा १२

०५. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १०

०६. भक्ति सुधा १२

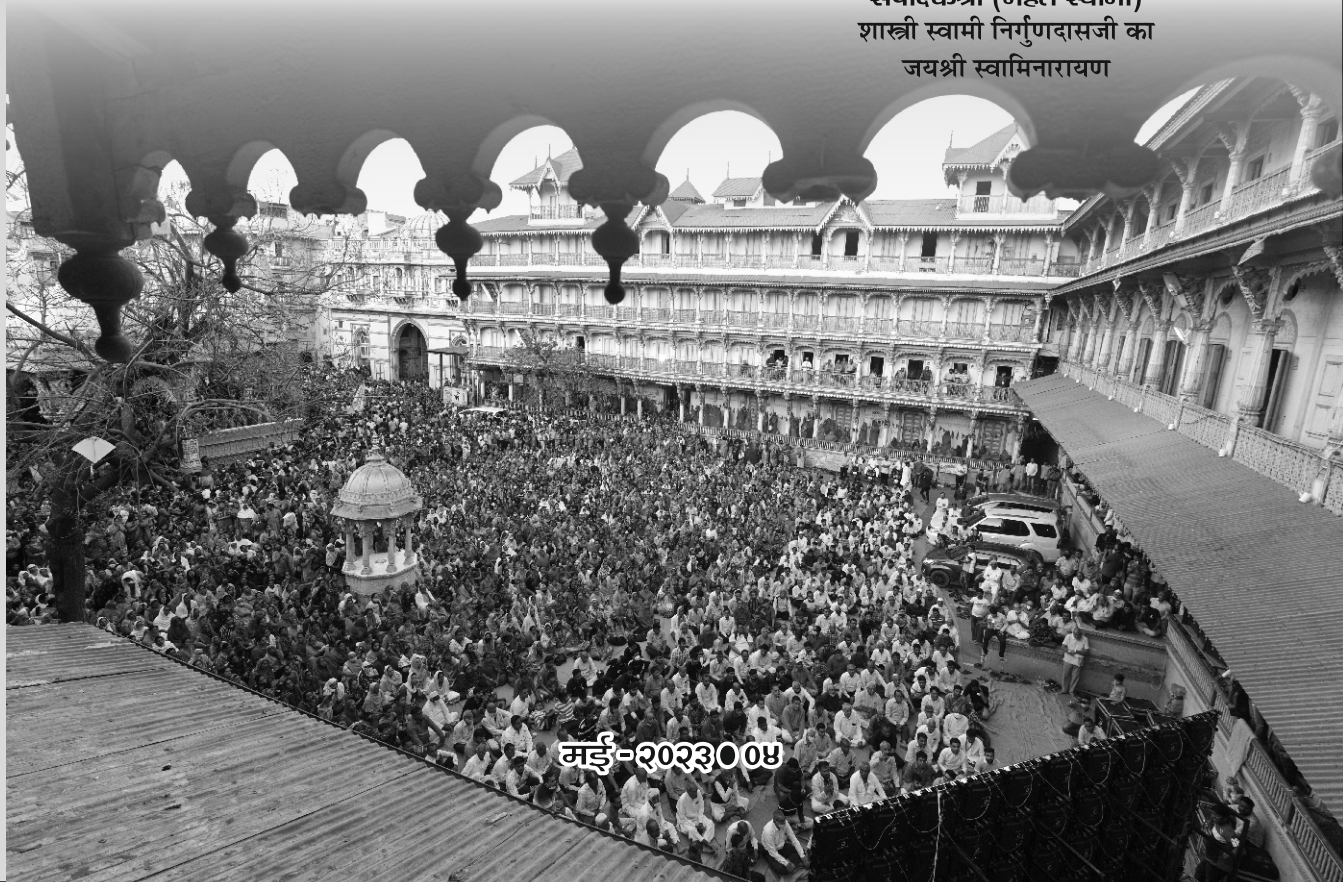
०७. सत्संग समाचार १४

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

मनुष्य मात्र को मुक्ति की ईच्छा होती है। दुःखो से, बंधन से, जन्म-मृत्यु से और पराधिनता से मिल जाये। इसका मार्ग नही मिल पाता है। यदि कोई मार्ग बताता है तो भी वह मार्ग अनेक प्रकार के संकटो वाला होता है। इससे गुजरने पर जीव की हिम्मत घट जाती है। इसका कारण सुख, वैभव और विषयों के प्रति आसक्ति, जब तक इसकी समाप्ति नही हो जाती है। तब तक मोक्ष एवम् भगवान के धाम की प्राप्ति नही होती है। इस मोह माया और वासना से भगवान के एकान्तिक भक्त होने पर ही मुक्ति हो सकती है। सच्चा एकान्तिक भक्त किसे कहते है ? इसको श्रीजी महाराज ने वचनामृत में स्पष्ट और सरल रुप में बताया है। ''मुक्तानंद स्वामी पूछे, महाराज भगवान का एकान्तिक भक्त किसे कहते है ? तभी श्रीजी महाराज बोले कि जिसे भगवान के अलावा कोई वासना न हो। स्वयं को ब्रह्म स्वरुप मानकर भगवान की भक्ति करता हो उसे एकान्तिक भक्त कहते है।'' यह तो महाराज की बात है। लेकिन हम लोग तो कई प्रकार की मन में ईच्छा रखकर घुमते है। तो एकान्तिक रुप में क्या विचार सकते है ? किसी को मठ या संस्था बनाना है। तो किसी को अधिक शिष्य बनाना है। तो वहाँ एक भगवान कहाँ रहे ? यह तो अनेक हो गये।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अप्रैल-२०२३)



९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति अहमदाबाद रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल) (मूली प्रदेश) अ.नि. सांख्ययोगी अमरबा के याद में आयोजीत कथा पारायण के अवसर पर पधारना।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर रामनगर (ता. कलोल) के ५० वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहेनो का) रामपरा (मूली प्रदेश) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१७ थी २६ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महामहोत्सव अपने सानिध्यमें उल्लासपूर्वक पूर्ण किया।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर सेराली (कच्छ-वागड) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर आदलसर (ता. लखतर - मूली प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा



(अप्रैल-२०२३)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मालवण (महिसागर) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति अहमदाबाद रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर देलमाल सार्धशताब्दी महोत्सव के अवसर पर पधारना।

१७ से २१ और २३ से २५ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महामहोत्सव को अपने सानिध्यमें उल्लास पूर्वक संपन्न किये।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

अहमदाबाद मंदिर के प्रेरक स्वयं

भगवान श्री स्वामिनारायण

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)



भगवान श्री स्वामिनारायण के दीन गूढ संकल्प अर्थात् उपासना की शुद्धि के लिये मंदिर बनावाकर उसमें अपने स्वरुप को प्रस्थापति करना था । इस संकल्प को साकार करने के लिये श्रीहरि नंद संतो के द्वारा नव महामंदिरो का निर्माण कराके स्वयं मूर्ति को प्रस्थापित किये थे । नव महामंदिरो में से एक अहमदाबाद मंदिर की विशेषता यह है कि इस मंदिर के प्रेरक स्वयं श्रीहरि है । यह विश्व में स्वामिनारायण सम्प्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर है । इस जमीन को अंग्रेज सामने से आकर श्रीहरि को कृष्णार्पण किये थे । शेष आठ मंदिरो के निर्माण के लिये । उस देश के अग्रणी भक्त गण लोग श्रीहरि से प्रार्थना किये ।

सत्संग का द्रोह और दूराचारी पाप करने के कारण पेशवा शासन का अंत हुआ । और संवत १८७४ में अंग्रेजो का शासन आया । अहमदाबाद के अंग्रेज प्रथम अधिकारी (सर एन्ड्रूज) तथा दुलाव श्री (सर डनलप उनका दूसरा नाम दुर्लभ साहेब) था । डनलप साहब के पास से भगवान श्रीहरिने अहमदाबाद मंदिरके जमीन के सम्पादन के लिये । सत्संग से महत्व का काम करने के लिये । भगवान का असर दिखाने के लिये । उनका जंगल में विशाल शेर से रक्षा किये थे। ये अंग्रेज स्वयं इसाई धर्म का पालन करते थे । लेकिन ईमानदार मानव की सहायता करने वाले । ये लोग इस धर्म को जानकर तथा हरि संतो के आचरण को देखकर अति प्रभावित हुए । इस लिये दुर्लभ सर छडीदार कुबेरसिंह से पूछे कि अरे मंत्रि । इस नगर में प्रत्येक नागरिको के गुरुलोग दूर-दूर जगह से आते है । तो आप के गुरुजी श्री स्वामिनारायण यहाँ क्यो नही आते है । तभी कुबेरसिंह पेशवा के समय के सुबेदार की कहानी को विस्तृत रुप से उन्हे बताये । यह सुनकर दुर्लभ सर श्रीहरि को लिखित संदेश भेजकर आमंत्रण दिये थे । इस प्रसंग मे भी प्रेरणा तो श्रीहरि की ही थी । क्योकि श्रीहरि की आज्ञा से स.गु. मुक्तानदं स्वामी अहमदाबाद में रहकर कुबेरसिंह छडीदार आदि भक्तो को साथ में रखकर सरकार से मिलकर श्रीहरि के साक्षातकर्ता की बात बताये । इस कारण से अंग्रेज अधिकारी के अन्दर सत्संग के गुण का विकास हुआ ।

पत्र को पढकर श्रीहरि अधिक खुश हुए । तथा सभी आवश्यक वस्तु लेकर अहमदाबाद आये । ऐसा साहब घोडागाडी में बैठकर श्रीहरि के सन्मुख आये । टोपी उतारकर श्रीहरि को प्रणाम किये । विनयी बातो से स्वागत किये । पांचवे दिन एरणसर सवारी सहित श्रीहरि को अपने घर सम्मान पूर्वक ले गये । वहाँ पर डनलप सर भी उपस्थित थे । अपने मंत्रीयो से मिलकर एक संकल्प ले रखे थे । इस संकल्प को जानकर श्रीहरिने अपना चमत्कार दिखाया । तथा भगवान के प्रति दृढता का भाव पैदा किये ।

उपस्थिति के समय नीति विषयक संवाद में श्रीहरिने भविध्यकथन कहा था कि आप लोग जब तक नीतिगत कार्य करेगे तब तक विकास करेगे । जब नीति का त्याग करेगे । तो बुद्धि खराब हो जायेगी । प्रजा सुखी नही रहेगी तो आप दुखी हो जायेगे । साहब श्रीहरि की बाते सत्य मानकर बोले की आप का जन्मो-जन्मतक सत्कार हो । मेरा आग्रह है । आप यहाँ पर अपना निवास बनाये । आप जहाँ पर बोले अच्छी से अच्छी जगह दे । हमारे जैसे कई लोग कम्पनी के अर्न्तगत कार्य करते है । हम भी स्वतंत्र नही है ।

दूसरे दिन श्रीहरि अहमदाबाद से निकलने के लिये तैयार हुए । उस समय अहमदाबाद के अग्रणी भक्तो को बुलाये और बोले । नये वास के सामने नायक का घर है । वहाँ तक जो जगह है । उसके दोनो तरफ संतो के निवास के लिये धर्मशाला बनवाये । साहब को बोलकर जगह ले लेना । संत का स्थान हो जाने पर नरनारायणदेव वहाँ आकर निवास करेगे । श्रीहरिने जगह निश्चित कर दिया था । जमीन के मध्य श्रीहरि ने घोडा खडा किये थे । वह पैर से जमीन खोद रहा था । श्रीहरि बोले सर्वप्रथम हमारे घोडेने मुहुर्त कर दिया । अब आप को अवसर है । सन १८७५ में श्रीहरि का पुनः अहमदाबाद में आगमन हुआ । तब एरम सर भावपूर्वक मिले और बोले आप यहाँ पर निवास करे । तो हम लोगो को खुशी होगी । गाँव में अधिक जगह है । आप समझ कर बताये । हम जगह दे देगे । श्रीहरिने कहाँ कि राजाका आदेश नही होने के कारण हमने निर्माण कार्य नही किया । आप तो राजा के भी राजा है । इस कार से आपकी सहायता से उचित जगह देखकर आप को बताकर आवेदन करेगे । नये वास के बाहर वाली जगह श्रीहरि को उथ्तम लगी । कुबेरसिंह को बुलाकर कहे कि जो ये विरान जगह है । वह संतो के लिये रखो । जगह का दस्तावेज कराके धर्मशाला बनाना । हमारे नाम का पत्र लिखवाना । कभी बदला न जा सके वैसा दस्तावेज तैयार करवाना । लेख हो जाने के पश्चात छोटे भाई विप्र की धर्मशाला बनाने की आज्ञा दिये ।

पुनः साहब श्रीहरि का स्वागत किये । साहब के पूछने पर श्रीहरिने अपने चयनित स्थान को बताया था । संतो की जगह देखर श्रीहरि खुश हुए और बोले उत्तर की विरान जगह हमे ले लेना है । जो विरान नही रहे । श्रीहरि के संकल्प से साहब मुलाकात मे बोले कि आप विरान जगह भी ले लीजीये । क्योकि आप का दिन-प्रतिदिन प्रसार बढ रहा है । आपके आश्रीतो की संख्या बढती जा रही है । तब श्रीहरि बोले मेरा मन यहाँ मंदिर बनाने का कह रहा है । (यहाँ पर यह सिद्ध हो रहा है । कि अहमदाबाद मंदिर के प्रेरक स्वयं श्रीहरि है) । लेकिन बडे लोग मंदिर नही बनाने दे रहे है । ऐसा जानकर हम लोग शुरु नही कर रहे है । (मानवचरित्र) सर एन्ड्रुझ ने कहाँ आप को जगह दे रहे है । आप का कोई नाम नही लेगा । ऐसा अच्छा आप का मंदिर बनेगा । लोगो के बैर भाव समाप्त हो जायेगे । इस लिये आप हर गाँव-शहर में मंदिर बनाये । जिससे निंदा करने वाले चुप हो जायेगे । तभी श्रीहरिने कहा हे राजन् यदि आप सूर्य और चन्द्रमा को साक्षी मानकर ताम्रपत्र पर अचल लेख लिखकर दे तो हम इस शहर ऊँचा शिखरबद्ध मंदिर बनायेगे । इस मंदिर में भरतखंड के अधिपति, सभी अवतारो के उत्पत्ति के कारण साक्षात् नरनारायण भगवान की मैं

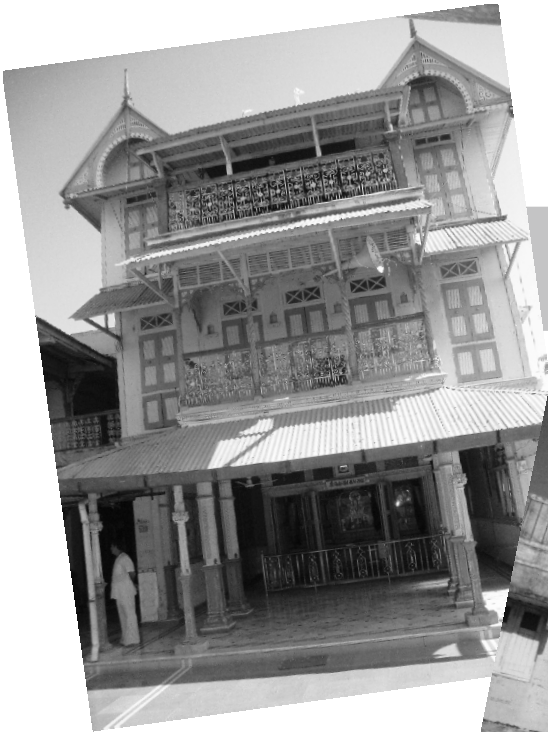
(पेईज नं. ९)

श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण पावन प्रसादी के गाँव

धमासणा

– संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटे १५ मिनट
- अहमदाबाद विमान अड्डे से ४७ मिनट









धमाणसा मंदिर : अहमदाबाद से मेहसाना रेलवे की सुविधा है । उसमें बीच में कलोल जक्शन आता है । वहां पर उतर कर माणसा जाने वाली एस.टी. बस से धमासणा जा सकते है । यह गाँव तालुका कलोल और जिला गांधीनगर में आता है।

यहाँ पर हरिमंदिर है। मंदिर दक्षिण द्वार वाला है। मंदिर में श्रीजी महाराज की खडी प्रतिमा प्रस्थापित है । यहाँ पर श्रीहरि तीन बार आये थे । मंदिर में नीम की लकडी प्रसादी वाली है। तथा गाँव के सुथार पुरुषोत्तम भाई का घर प्रसादी का है। यहाँ पर श्रीहरि भोजन किये थे। उस घर के सामने नीम का वृक्ष था । उस नीम की डाल पकडकर श्रीहरि झूले थे । वर्तमान में नीम का वृक्ष नही है। उस नीम की लकडी मंदिर मैं ही । गाँव के बाहर बोखला नाम का कुआ प्रसादी का है। जहाँ पर श्रीहरि ओला गाँव से धमासणा आते हुए जलपान किये थे । यहाँ का मंदिर विशाल और सुंदर दिखाई देता है।

धमासणा में श्रीहरि : अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान दंढाव्य देश में विचरण करते हुए । झुलासण गाँव से धमाणशा गाँव में आये । हमारे गाँव में श्रीहरि आये है। यह जानकर उस गाँव के जेठाभाई केशाजी और पुरुषोत्तम ये तीनो सुथार भक्त तथा भवानीशंकर ब्राह्मण तथा जवेरभाई बनिया तथा मकनदास काशीभाई पटेल भक्त, कंकु, हीरा इत्यादि बहने भक्त सभी लोग गाजे-बाजे के साथ श्रीहरि के सामने गेय । ये लोग सामने जाकर कुमकुम, अक्षत, चंदन तथा पुष्पहार से सत्कार करके धमासणा गाँव में लाये थे। तभी पुरुषोत्तम नाम के सुथार भक्तने श्रीहरि महाप्रभु को दंडवत प्रणाम करके अपने घर लाया । घर पर ब्राह्मण द्वारा सुंदर भोजन बनवाकर श्रीहरि

को प्रसाद अर्पण किया । श्रीहरि के खाने के बाद संत-पार्षद को खिलाकर कृपा प्राप्त किया । इसके बाद श्रीहरि महाप्रभु उस गाँव में एक दिन रहकर आदरज गाँव में आये थे ।

ओला गाँव में श्रीहरि धमासणा आये थे । उस अवसर पर 'हरीलीलामृत सागर' ग्रन्थ के उ. तरंग-६९ निम्नानुसार है ।

पछे त्यां थकी श्री नरवीर ॥
धमाणसे गाँव गया धीर ॥
रायजीने काशीदास आदि ॥
जाणी ने थया सर्व आह्लादि ॥२०॥
सामैयुं करीने तेणीवार ॥
तेडी गया छे गाम मोजार ॥
कुवा उपर वडनुं वृक्ष ॥
तेना हेठे बिराज्या प्रत्यक्ष ॥२१॥
पछे श्रीहरिने त्यां जमाड्य ॥
सेवा करी आनदं पमाड्य ॥
प्रसादी वधि छे तेहवार ॥
प्रभुए नारिव कूप मोजार ॥

इस प्रकार श्रीहरिने अपने संतो-पार्षदो के साथ ओला गाँव से धमासणा गाँव में आकर सभी को पाप से मुक्त करके धर्मज्ञान देकर अधर्म के मार्ग से रोके थे । गाँव के सभी हरिभक्त श्रीहरि को प्रेम से भोजन कराके अमूल्य लाभ उठाये । इस प्रकार श्रीहरि धमासणा गाँव की धरा को पवित्र किये है । धमासणा गाँव के भक्तो को सुखी करके अक्षरधाम का अवर्णनीय सुख दिये । तभा मोक्षानुगामी किये थे । तथा सभी को सुख प्रदान किये थे ।

(अनु. पेईज नं. ७ से आगे)

स्थापना करुँगा । साहब बोले महाराज ! हमारी ९९ वर्ष तक दस्तावेज देने का अधिकार ही हमारा अधिकार ब्रिटिश कम्पनी के आधीन है । भारत में मुंबई में जनरल साहब सबसे उंचे पद पर है । कोई स्वतंन्त्र नही है । सबसे बडी सत्ता ब्रिटिश सरकार है । तभी शिक्षापत्री श्लोक नं. १४३ में श्रीहरिने अपने आश्रितो के लिये आदेश दिये है । कि अपने आचरण में व्यवहारिक दृष्टिकोण रखे । हमे यह जमीन ९९ वर्ष के पट्टे पर नही लेना है । सूर्य-चंद्र के साक्षी सहित ताम्रपत्र पर लिखकर हमेशा के लिये आधार चाहिए । नही तो जमीन नही चाहिए। न तो मंदिर बनाना है । तब साहब ने जिम्मेदारी ली तब श्रीहरिने संत-भक्तो को साथ में रखकर नवावास के बगल पाठकवाडी की जमीन चयनित किये । अंग्रेज अधिकारी श्रीहरि के गुणो का वर्णन करते हुए । ब्रिटेन की रानी विकटोरिया का हस्ताक्षर कराके विशेष आदेश प्राप्त करके सम्मानपूर्वक ताम्रपत्र के उपर पूरा दस्तावेज का कार्य मुक्तानंद स्वामी के निगरानी में कराके । वह दस्तावेज दुर्लभसिंह दोनो हाथ जोडकर विनयपूर्वक श्रीहरि को दिये थे । श्रीहरि अति खुश हुए । तथा उन्हें मोक्ष का वरदान दिये ।

श्रीहरि के आज्ञा से आनंदमुनि ने मंदिर का निर्माण कार्य किये थे । मंदिर निर्माण कार्य किये थे । मंदिर निर्माण के समय कई प्रशासनिक कार्य के विषय में श्रीहरि को अंग्रेज अधिकारी से बार-बार मुलाकात नही करनी पडे । तो उस कारण से श्रीहरि उस समय अपना अधिकार एक रुपया के स्टेम्प पर कुबेरसिंह छडीदार को दिये थे । और उसके उपर स्वयं अक्षराधिपति श्री सहजानंद स्वामी ने हस्ताक्षर किया था । पूरे सम्प्रदाय में श्रीहरि के हस्ताक्षर वाला एक मात्र पत्र वर्तमान समय में श्री स्वामिनारायण म्युजियम हाल नं. ८ में दर्शन के लिये रखा गया है । प्रतिष्ठा विधि के समय अंग्रेज अधिकारी अंग्रेजी बाजा बजाकर १०० तोपो के गोले के साथ नरनारायणदेव के प्रति भक्तिभाव दिखाये थे ।

अहमदाबाद के डनलप सर जब विलायत गये तब वहाँ के राजा को विस्तारपूर्वक बताये थे । तब वहाँ के राजा ने वहाँ के पादरी को अपने खर्च पर यहाँ मुलाकात के लिये भेजे थे । ये पादरी नडियाद में मिले थे । श्रीहरि के द्वारा दी गयी मूर्ति को साहब विलायत में दर्शन कराने के लिये माँगे थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री यज्ञ पूजन

फरवरी-२०२३

ता. १९-०२-२०२३ प.भ.श्री रमेशभाई शांतिलाल ठक्कर (दोरडावाले) के विवाह के गोल्डन ज्युबली के निमित्त - वर्त. काशीबा परिवार - कांकरिया-मणीनगर।

अप्रैल-२०२३

ता. १४-०४-२०२३ प.भ.श्री अमृतभाई शिवाभाई पटेल - विहारवाला - वर्त. प्रकाशभाई तथा विहांगभाई पटेल - अहमदाबाद।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

फरवरी-२०२३

ता. ०१-०२-२०२३ प.भ.श्री जय, काजल तथा मानसी ब्रह्मभट्ट - वर्त. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट - यु.एस.ए.

ता. ०५-०२-२०२३ प.भ.श्री विनोदकुमार माणेकलाल पटेल तथा राजेशकुमार माणेकलाल पटेल - कलोल

ता. ०७-०२-२०२३ प.भ.श्री नपुर दिपकभाई पटेल - भाई जय के विवाह के निमित्त - कुंडालवाला-अहमदाबाद

ता. ०९-०२-२०२३ प.भ.श्री निर्वा धवलकुमार महेन्द्रकुमार भावसार - सीडनी

ता. १०-०२-२०२३ प.भ.श्री राकेशभाई अमृतभाई पटेल - पिताश्री के प्रथम पुण्यतिथि पर - केनेडा

ता. १२-०२-२०२३ प.भ.श्री अरविंदभाई सेंधाभाई पटेल - चि. केतन तथा निशिक विवाह पर - बोपल

ता. १४-०२-२०२३ प.भ.श्री सरोजबेन हसमुखभाई अमीन - कंडारीवाळा - यु.एस.ए.

ता. १८-०२-२०२३ प.भ.श्री नंदकुमार नारणभाई पटेल - साचोदरवाला - हिंमतनगर

ता. १९-०२-२०२३ प.भ.श्री जगदीश रतिलाल ठक्कर - अहमदाबाद

ता. २२-०२-२०२३ अपने स्वामिनारायण म्युझियम में १२ वें वार्षिक उत्सव पर समूह महापूजा के यजमानश्री घनश्यामभाई कुबेरभाई पटेल - वर्त. शारदाबेन, डॉ. समीर, जीज्ञाशा, व्योम तथा नव्या - विहारवाला - वर्त. शाहीबाग

ता. २५-०२-२०२३ प.भ.श्री निमेष भरतभाई पटेल - वर्त. भरतभाई कांतिभाई पटेल - डांगरवावाला - वर्त. केनेडा

ता. २६-०२-२०२३ प.भ.श्री आदित्य पंकजभाई मुधोककर - सेटेलाईट

मार्च-२०२३

ता. ०३-०३-२०२३ प.भ.श्री गोविंदभाई रामदास पटेल - ईटादरा - वर्त. नरेशभाई तथा हरेशभाई.

ता. ०४-०३-२०२३ प.भ.श्री अमृतभाई मगनदास पटेल - डांगरवावाला - न्यु राणीप.

ता. ०५-०३-२०२३ प.भ.श्री मुकेशकुमार बलदेवभाई पटेल - डांगरवावाला - न्यु राणीप.

ता. ०८-०३-२०२३ प.भ.श्री ठाकरशीभाई करशनभाई पटेल - यु.एस.ए.

ता. १२-०३-२०२३ प.भ.श्री नटुभाई कांतिलाल पटेल - मारूसणावाला - वर्त. कडी.

ता. १५-०३-२०२३ प.भ.श्री दर्शिव सौमिलभाई पटेल के जन्म दिन पर- वर्त. कांतिभाई रामदास पटेल.

ता. १९-०३-२०२३ प.भ.अ.नि.श्री निर्मलाबेन रसिकलाल लल्लुदास तथा अ.नि. प्रविणभाई रसिकलाल लल्लुदास भावसार के याद में - वर्त. अल्काबेन प्रविणभाई भावसार

ता. २३-०३-२०२३ प.भ.श्री जयेशभाई परसोतमभाई गज्जर परिवार - रामबाग-कांकरिया.

ता. ३१-०३-२०२३ प.भ.श्री भावनाबेन गोविंदभाई मिस्त्री - निर्णयनगर.

अप्रैल-२०२३

ता. ०२-०४-२०२३ प.भ.श्री भगवानभाई हंसराजभाई पटेल - खंडेरावपुरा.

(११ बजे) प.भ.श्री कंचनबेन मनसुखलाल वोरा - नारणपुरा.

ता. ०३-०४-२०२३ प.भ.श्री मनीष रवजी वेकरीया - ओस्ट्रेलीया.

ता. ०८-०४-२०२३ प.भ.श्री नंदुभाई खेमचंदभाई पटेल - मोटपवाला - सुरत.

(दोपहर) प.भ.श्री कांति नारण हालाई - मेघपर-कच्छ - यु.के.

ता. ०९-०४-२०२३ प.भ.श्री करशनभाई रामजीभाई हालाई - कोडकी-कच्छ - वर्त. नारणभाई तथा लालजीभाई तथा निलेषभाई.

ता. ११-०४-२०२३ प.भ.श्री लाभुबेन रमणीकभाई चौहाण - काचा टेलर्स - लंडन.

ता. १६-०४-२०२३ प.भ.श्री प्रितेष मुळजीभाई नाथाणी - न्युजीलेन्ड.

ता. २२-०४-२०२३ प.भ.अ.नि.श्री कनैयालाल परसोतमदास चौहाण तथा अ.नि. धनगौरीबेन कनैयालाल चौहाण - दूसरी पुण्यतिथि के असवर पर - वर्त. भरतभाई कनैयालाल चौहाण - सी.टी.एम. - अहमदाबाद.

ता. २९-०४-२०२३ प.भ.श्री नितेष नटवरभाई पटेल - करजीसणवाला - फ्लोरिडा

ता. ३०-०४-२०२३ प.भ.श्री अरविंद गोविंद मेघाणी - बलदिया-कच्छवाला

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची

फरवरी-२०२३

रू। ५१,०००/- प.भ. हंसावतीबेन, मयुरीबेन, बीनाबेन, भूमिबेन, आकाशभाई तथा दशरथभाई पटेल - वडु

रू। ५१,०००/- प.भ. रमणभाई कचराभाई पटेल - वर्त. मधुबेन, अजयभाई, फेक, सीमा तथा एकता.

रू। ५०,०००/- प.भ. बाबुभाई मथुरभाई पटेल - माणसावाला - वर्त. अहमदाबाद

मार्च-२०२३

रू। २,००,०००/- प.भ. श्रीमती लीलाबेन प्रहलादभाई पटेल - यु.एस.ए. - करजीसणवाला - अहमदाबाद

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
धर्नुमास पारायण का अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन में प्रेम भावना की प्रधानता रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

ज्ञानी और प्रेमी दो प्रकार के भक्त होते है। इसमें दोनो भगवान को पहचानते है। दोनो में मात्र अन्तर यह है कि ज्ञानी भक्त ज्ञान के द्वारा परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करता है। कभी कभी इसके मध्य अहंकार आ जाता है। अहंकार से भगवान दूर हो जाते है। इस लिये ज्ञानी भक्त में यह भय हमेशा बना रहता है कि अहंकार आ जाने पर भगवान से दूर हो जाता है। और प्रेम-भक्ति में अहंकार होता ही नही है। ज्ञानी को अज्ञानी बनने का डर लगा रहता है। लेकिन प्रेमी भक्त का जीवन कैसा रहता है ? मैं भगवान को अधिक से अधिक प्रेम करु। प्रेम में प्रेम करने वाला अपने प्रेमी को कही अन्य प्रेम न करे। इस भय से अधिक प्रेम करता है। एक माता है। उस माँ को दो बच्चे है। एक बच्चा माँ की अंगुली पकडकर चलता है। और दूसरा ऐसा बच्चा है कि जिसकी अंगुली उसकी माँ पकडी रहती है। इन दोनो बच्चो में सबसे सुरक्षित कौन बच्चा है ? तो माँने जिस बच्चे की अंगुली पकडी है। वह बच्चा अधिक सुरक्षित है। क्यो कि जो बच्चा माँ हाथ पकडा है। उसमें अंगुली छूट जाने की संभावना रहती है। वह मनपसंद वस्तु को पकडने के लिये दौडता है। और बच्चे की अँगुली छूट जाती है। माता बच्चे का हाथ नही छोडती है। तो ज्ञानी एवम् प्रेमी भक्त में यही मौलिक अंतर है। प्रेमी भक्त के उपर भगवान की विशेष कृपा बनी रहती है। भगवान उसका हाथ पकडे है। ज्ञानी को ज्ञान का अभिमान आ जाने पर भगवान दूर चले जाते है। प्रेमी भक्त का हाथ भगवान स्वयं पकडे रहते है। ज्ञानी भक्त होना गलत बात नही है। लेकिन उसमें डर बना रहता है। शबरीथी ज्ञानी भक्त नही थी। हम लोगो से भी कम ज्ञानी थी। क्योंकि ? हमें पता है कि भगवान को जूठा भोजन नही खिलाना चाहिए। लेकिन शबरी को इसका ज्ञान नही था। भगवान के प्रति इतना प्रेम था कि मीठे बेर चख-चखकर रखी थी। ताकि प्रभु को खट्टे बेर न मिले। भगवान शबरी के प्रेम में वशीभूत होकर उसके जूठे मीठे बेर खाये थे। अर्थात् ज्ञानी भक्त बनने से अच्छा प्रेमी भक्त बनना है। हम यादे विचारे तो हमे धन, परिवार से कितना प्रेम होता है। यदि इससे आधा भी भगवान से प्रेम करे तो कल्याण हो जायेगा। हम परिवार के साथ कितना समय बिताते है। भगवान अर्थात् सत्संग में कम समय देते है। प्रतिदिन का नियम है इस लिये थोडा कर लेते है। नित्य-नियम सब केसे करते है। यह कार्य यंत्रवत करते है। शांति से नही करते है। शीघ्रता से बोलते है। कुछ ज्ञात नही होता है। जिम्मेदारी है ? इस लिये पूरा करते है। व्यवहारिक जीवन में जिम्मेदारी और कर्तव्य पूरा ही करना है। जब हम भगवानके कार्यो में ऐसा करते है। जैसे ५० से १०० माला जप करना है। पूरा कर दे ऐसा नही। केवल करके समाप्त करना है। अधिक भक्ति आये इस तरह का भाव रखना है। बच्चो को एक दिन नही देखने से घबराहट होने लगती है। दो दिन मंदिर नही जाने पर घबराहट होती है। नही क्यो नही ? क्यो कि भगवान को मूर्ति स्वरुप में मानते है। मूर्ति में प्रत्यक्ष का भाव रखना चाहिए . भगवान भाव के भूखे है। पढे लिखे लोग कहते है कि हम सभी कार्य भाव सेक रते है। सब कुछ भगवान को अर्पण करते है। सब कुछ भगवान के लिये तैयार करते है। लेकिन थाली में से कुछ कम नही होता है ? भगवान कहाँ भोग लगाते है। भाव से बनाते है तो

क्यो नही ग्रहण करते है । यह समझने के लिये एक उदाहरण समझना पडेगा । प्रत्येक फूल में मधु होती है । पुष्प के अन्दर से जब मधुमक्खी पराग ले लेती है । तो क्या फुल पर कुछ प्रभाव पडता है । फूल वैसे का वैसा बना रहता है । फूल दो देखकर कोई ज्ञात नही कर सकता है । फूल के दल भी नही गिरते है । कुछ नही होता है । वह मात्र मधुमक्खी को ज्ञान होता है । जो मधु लेकर जाती है । तो भगवान भी इसी तरह ही है । भगवान आकर आप का भाव ग्रहण कर जाते है । तो महाराज ऐसे ही ग्रहण करते है । भगवान बैठकर प्रत्यक्ष नही खाते है । आप थाली देखकर नही कह सकते की महाराज नही खाये है । मधुमक्खी की तरह ग्रहण कर लेते है ।

और प्रत्येक व्यक्ति को भगवान को धन्यवाद देना नही भूलना चाहिए। ऐसा नही मानना चाहिए कि मै कमा रहा हूँ तो सब कुछ मिल रहा है । भगवान दे रहे है । कृपा करते है । दया करते है । इस लिये सब कुछ मिलता है । परिश्रम का फल मिलता है । और मिलना भी चाहिए । मेहनत से सब कुछ मिलता तो मजदूर लोग कितना श्रम करते है । उन्हे तो अधिक मिलना चाहिए ? प्रतिदिन १८ घंटे कार्य करते है । पत्थर काटते है । वजन उठाते है । कैसी-कैसी मजदूरी करते है । तो भी दोनो समय का भोजन अच्छे से नही पाते है । रोटी-सब्जी का मिलना भी अनिश्चित होता है । हम लोग तो इतना श्रम तो नही करते है । यह भगवान की हम पर कृपा है । बिना मेहनत का मिला ये भ्रम है । घर पर बैठे-बैठे सबकुछ मिल जा रहा है । हम लोगो को लड्डू खाकर सत्संग करना है । महाराज बोले है कि हमारी भक्त अन्न और वस्त्र के लिये परेशान नही रहेगा । हमारे जीवन में कभी ऐसा नही रहा कि हम भुखे रहे हो । शायद किसी के घर मे नही हो तो मंदिर हमेशा खुला रहता है । मंदिर में कभी नही बोला जाता है कि आप को भोजन नही दिया जायेगा । अर्थात् भगवान को शरणागत को अन्न जल अवश्य ही मिलता है । भगवान माँगे बिना सब कुछ दे दिये है । सबसे बडी बात तो यह है कि मानव शरीर हमे दिये है . इस शरीर के द्वारा सब कुछ सम्भव है । इस लिये सद्उपयोग कर लेना चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य इस संसार में रहने के लिये श्रम करता है । इस समय मौका है । शरीर है । तो कमा कर घन एकत्र कर ले । अपना घर बना ले । और शांति से रहे । यह सब कब होगा ? जब समझ कर कमाई करते है । ऐसा नही करने पर भाडे के मकान में रहना पडता है । समय के साथ बदलना पडता है । भटकना पडता है । एक घर से दू सरे घर जैसे अपना शरीर भी किराये का एक घर है । इसमें आत्मा का निवास होता है । समय पूर्ण हो जाने पर जगह खाली कर देना पडता है । पुनः जैसी अपनी क्षमता होगी । उसी प्रकार दूसरा घर (शरीर) प्राप्त होती है । यदि हम इस जन्म में अवसर का लाभ उठाते है । अर्थात् आध्यात्मिक कमाई करते है । इससे हमे स्थायी निवास मिल सकता है । पुनः किराये के कमान में नही भटकना पडेगा । अर्थात् 'स्थायी निवास' भगवान का धाम मिल जाता है । अभी सब कुछ अनूकुल है । अवसर भी है । मंदिर है । शास्त्र है । सत्संग भी है । नरनारायणदेव भी है । क्या कमी है ? सब कुछ तो है । केवल उपयोग करके आध्यात्मिक कमाई कर लेना है । आप सभी लोग मेहनत तो करते ही है । इस लिये यहाँ पर बैटे है । प्रेमी भक्त है । इसलिये आये हुए है । नरनारायणदेव का दर्शन करने आये है । सब कुछ ठीक और अच्छा है । केवल एक बात का ध्यान रखना है । प्रेम-भक्ति पर बल दे । सजग और सचेत रहे । यदि भगवान के प्रति प्रेम हो जायेगा तो फिर सभी प्रयास अपने आप होने लगेगा ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के २०१ पाटोत्सव

सर्वोपरी आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री और पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबदा मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव का २०१ पाटोत्सव महोत्सव अधिक उल्लास से मनाया गया।

इस कार्यक्रम के अवसर पर श्री नरनारायणदेव मानस कथा ता. २०-०२-२०२३ से ता. २२-०२-२०२३ तक पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी के वक्ता पद से की गयी।

फाल्गुन सुद-३ ता. २२-०२-२०२३ को प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक प.पू. बड़े महाराजश्री और परमपूज्य लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक वेदोक्त विधिसे पूर्ण किये।

अवसरोचित सभा में यजमान परिवार प.भ.अ.नि. शिवाभाई मादऴदास पटेल (विहारवाले) के पुत्र प.भ. अमृतभाई, प.भ. जयंतीभाई पटेल आदि परिवार प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये। महोत्सव के सहयजमान पद का लाभ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (कालुपुर मंदिर) ने किया था। पू. महंत स्वामी आदि विद्वान संतो ने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की महिमा को समझाये। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने यजमान परिवार और पूरे सभा को प्यार भरा आशीर्वाद दिये।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में फूलदोलोत्सव मनाना

भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव के प्रागट्योत्सव के दिन फाल्गुन वद-१ ता. ८-२-२३ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पूजा-आरती किये। श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने प्रासदी के अबील गुलाल को छिडककर मंदिर के चौक में हजारो भक्त समुदाय मे केशुडा के अलौकिक रंग से भिगो दिये थे। लगातार एक घंटे तक श्री नरनारायण भगवान का आश्रितोने दिव्य लाभ लेकर तृप्त हुए। महंत स्वामीने सुंदर व्यवस्था किये थे।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री रामनवमी-श्रीहरि प्रागट्योत्सव

चैत्र सुद नवमी ता. ३०-३-२३ के दिन अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से सर्वोपरि आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। प्रातः ६-३० से ७ बजे अक्षरभवन में विराजमान सर्वोपरि छपैयाधीश बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा षोडशोपचार महाभिषेक उल्लासपूर्वक मनाया गया। दोपहर। २ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी भगवान का प्रागट्योत्सव आरती के साथ किया गया। रात्रि १०-१० पर सर्वोपरि अवतारी भगवान श्री घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव आरती पूरी की गयी। हजारो हरिभक्त आज के दिन भगवान श्रीहरि का दर्शन करके लाभ उठाये। तथा धन्यता प्राप्ति किये। पूरा आयोजन पू. महंत स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी के देख-रेख में पूर्ण हुआ।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क का रजत जयंती महोत्सव मनाना

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क (नवा-नरोडा) में अप्रैल १९९८ में प.पू. बडे महाराजश्री के करकमलो द्वारा देवो की प्रतिष्ठा विधी पूर्वक की गयी थी। इस अवसर का २५ वर्ष पूरा होने पर श्री नरनारयणदेव की परमकृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के परिवार के शुभ आशीर्वाद से गांधीनगर

मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से तथा शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर) एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सह सत्संग समाज के प्रबन्ध से ता. ३-४-२३ से ९-४-२३ तक रजत जयंती महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

महोत्सव के अवसर पर कथा पारायण अनेक अन्नकूट दर्शन, अभिषेक तथा धार्मिक, सामाजिक क्रिया-कलाप का आयोजन किया गया था।

स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी कोटेश्वर के वक्तापद से संगीतमय शैली में श्रीमद् भागवत रात्रीय सप्ताह का पारायण का प्रबन्ध किया गया था। अग्रणी संतो के करकमलो द्वारा दीप प्रगटीकरण तथा कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी के मंगलमय उद्बोधन से महोत्सव का शुभारम्भ किया गया। कथा के अर्न्तगत पोथीयात्रा, नगरयात्रा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मणी का विवाह और रासोत्सव आदि उमंग के साथ पूर्ण किया गया था। ठाकुरजी की शोभायात्रा हर्षदकोलोनी मंदिर से लेकर कर्मशक्ति मंदिर का महोत्सव के स्थान पर गयी थी।

पाटोत्सव के दिन छप्पनभोगन अन्नकूट की आरती प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के करमकलो द्वारा की गयी। पाटोत्सव के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा महोत्सव के मध्य प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री भी पधारे थे। महोत्सव के समय धामो-धाम से १०० जितने ब्रह्मनिष्ठ संत आये थे।

महोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ. परसोतमभाई टी. पटेल (भाउपुरा), भीखाभाई आर. सरधारा (गढडा) तथा दुर्लभभाई जी. सावलिया कथा पारायण के मुख्य जमान पद पर प.भ. प्रफुलभाई डी. गेलाणी आदि छोटे-बड़े १२० जितने यजमानश्रीओने दिव्य लाभ उठाया था। धर्मकुल तथा संतो का यथोचित पूजन तथा यजमान लोगो की यथोचित सम्मान किया गया।

पूर्व अहमदाबाद निकोल-नरोडा रोड अधिक विकास करने के कारण प.पू. महाराजश्री इस क्षेत्र में अपना एक नया मंदिर निर्माण हेतु पू. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) को आज्ञा दिये। एलान करते ही कई दाता अधिक धन का निबन्धन कराया था। प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सभी को आशीर्वाद दिये।

प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से महोत्सव के अर्न्तगत एक वर्ष तक की गयी धार्मिक सामाजिक सेवा एवं क्रिया कलाप।

(१) धार्मिक : २५०० भक्तो द्वारा ढाई करोड मंत्र का लेखन, कर्म शक्ति मंदिर मे २५ घंटे तक धुन, अहमदाबाद मंदिर कालुपुर, एप्रोच, हर्षद कोलोनी, निकोल और आदिश्वरनगर नरोडा मंदिर में कुल ३५ घंटे की धुन, २५ की संख्या में सत्संग सभा, घर सभा (धून-कीर्तन), जीन मंगल समूह पाठ, सामुहिक बंदलापाठ, स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित १०८ पद का गायन प्रसादी के स्थानो का दर्शन, २५० भक्तो की संख्या में भजन-भक्ति के अनेक चिहन समुह महापूजा, पदयात्रा द्वारा कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन, पु. पी.पी. स्वामी और संतो के सानिध्य में २५०० भक्तजनो की उपस्थिति में सत्संग सभा के साथ शाकोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम में समूह महापूजा और अभिषेक।

(२) सामाजिक : २५० की संख्या में हेल्थ कार्ड, श्रमकार्ड इत्यादि सरकारी योजनाओ का लाभार्थियो को दिलाया गया। बिदुर्यार्थियो को शैक्षणिक किट, विधवा बहनो को किट, युवको द्वारा रात्रि में क्रिकेट मैच जिस में एप्रोच की टीम विजय प्राप्त की थी। २५० गरीबो को चप्पल, २५० बैग रक्तदान, महोत्सव के स्थान से २१ ब्लड बैग रक्तादन, २५०० की संख्या में सिविल, शारदाबेन, जी.सी. एस इत्यादि चिक्त्सिालयो में रोगियो को फल वितरित किया गया था। गरीब विस्तार में कपडो का वितरण, शहर-ग्राम्य मे गरीबो को भोजन कराया गया ता। २५ सार्वजनिक स्थानो की स्वस्छता की गयी, सर्व रोग निदान कैम्प के माध्यम से १२०० रोगियो का निरीक्षण तथा राहतदर से दवा एवम् देखभाल की गयी। कथा के सुनने बहनो को ३५००० प्रसाद बाक्स का वितरण २५००० भक्तो को भोजन प्रसाद सामाजिक क्रिया-कलाप में लगभर २५ लाख का खर्च (सांख्योकी सूचना प.भ.श्री डी. एम. वेकरिया) लाईव प्रसारण - कर्तव्य चैनल तथा कालुपुर मंदिर के यु-ट्यूब चैनल और फेसबुक। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर का १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव तथा बहनो के मंदिर में नूतन श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से अ.नि. भंडारी दादा श्री जानकीवल्लभदासजी स्वामी के शिष्य मंडल (एप्रोच) की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से उपरोक्त महोत्सव ता. २७-१-२०२३ से ता. २९-१-२०२३ तक भव्य रुप से पूर्ण किया गया था।

महोत्सव के उपलक्ष्य में शा. स्वामी श्री अभिषेकप्रसाददासजी (वडनगर) के वक्तापद से सुंदर संगीतमय शैली में वैराग्य मूर्ति स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित हरिस्मृति का तीन दिन का कथा प्रबन्ध किया गया था। प.भ.श्री रमेशभाई ए. पटेल के यजमान पद से पूर्ण किया गया था। कार्यक्रम के अर्न्तगत कालुपुर मंदिर पदयात्रा, पोथीयात्रा, संहिता पाठ, श्री ठाकुरजी की नगर यात्रा, श्री हरियाग यज्ञ, प.पू. महाराजश्री के करकमलो द्वारा महाभिषेक, छप्पन भोग अन्नकूट आरती प्राणप्रतिष्ठा तथा अंत में प्रासंगिक सभा का आयोजन किया गया था। कथा का प्रारम्भ कीर्तन-भक्ति तथा वरिष्ठ संतो के हाथो से दीप प्रगटीकरण और महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के उद्‌बोधन से हुआ था।

इस अवसर पर चालन विधि यज्ञ से श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, गणपति और हनुमानजी के मूर्ति को रंगकर प.पू. महाराजश्री के करकमलो द्वारा पुनः प्रतिष्ठित किया गया था। श्री ठाकुरजी के गर्भ गृह को अच्छे संगमरमर के पत्थर से रिनोवेशन तथा प्रत्येक देव के सिंहासन को स्वर्ण रंग से नया रुप-रंग दिया गया था। सांख्ययोगी बहनो के साथ प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री भी इस अवसर पर आये थे। धामोधाम से ब्रह्मनिष्ठ संत आकर दर्शन तथा आशीर्वाद दिये थे।

नूतन श्री घनश्याम महाराज के मूर्ति के यजमान अ.नि. कनुभाई बी. वेकरिया और प.भ. श्री चंदूभाई जे. पटेल, श्री कृष्ण भगवान के मूर्ति के यजमान स.गु. स्वामी श्री देवकृष्णदासजी (रंगमहल-अहमदाबाद) तथा पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री धीरुभाई जी. शेलडिया सहित कई सेवा के यजमानो की यथोचित सम्मान करके प.पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये थे।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा गांधीनगर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा प.भ. ईश्वरभाई आदरभाई लल्लूभाई पटेल परिवार यजमान पद से यहाँ के उनावा मंदिर का ४१ वाँ पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाये थे।

इस अवसर के उपलक्ष्य में ता. १८-४-२०२३ से २२-४-२३ तक श्रीमद् सत्संगीभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (एप्रोच बापुनगर) के वक्तापद से पूर्ण हुए।

ता. २२-०४-२०२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक पूर्ण किया गया। नये भोजनालय का उद्‌घाटन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से किया गया। इस के यजमान प.भ. रमणभाई सोमाभाई पटेल, नागरदास पटेल तथा प.भ. बिमलाबेन रमणभाई पटेल परिवार था। महंत श्री देव स्वामीने सुंदर प्रबन्ध किया था।(मयूर फेनिल पटेल - उनावा)

जेतलपुर धाम का १९७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने हाथो से प्रतिष्ठित महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन के अनुसार ता. १५-३-२०२३ फाल्गुन वद अष्टमी के दिन १८७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव अधिक उल्लास के साथ मनाया गया।

इस पाटोत्सव के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण त्रिदिवसीय कथा पारायण शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी के वक्ता पद से कथामृत का रसपान कराये थे। धामो-धाम से

संत आकर आशीर्वाद दिये थे । प.पू. १०८ भविष्य के आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर नये गंगा माँ रसोई घर का उद्घाटन करके सभा को आशीर्वाद दिये । पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. रमेशसिंह आशाभा परमार, ह. विक्रमसिंह जयदीपसिंह लाभ लिये थे । (महंत स.गु. के.पी. स्वामी - जेतलपुरधाम)

देलमाल गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवनी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, मेहसाणा मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन अनुसार पाटण जिले के देलमाल गाँव के लगभग १५० वर्ष प्राचीन श्री स्वामिनारायण मंदिर सार्ध शताब्दी महोत्सव ता. ९-४-२०२३ से ता. १३-४-२०२३ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

यह गाँव श्रीकृष्ण भगवान और बलरामजी महाराज के विशेष कृपा पात्र होने के कारण एवम् मल्लो का होने के कारण इसमें भुज के गंगाराम मल्ल जैसे भक्त हुए । ऐसे देलमाल गाँव में पंचदिवसीय श्रीमद् भागवत कथा पारायण की गई । जिस के वक्ता पद पर शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी (जेतलपुर) ने कथा का लाभ दिये थे । इस अवसर पर समूह महापूजा, विष्णुयज्ञ, रासोत्सव और मल्लकुस्ती के कार्यक्रम किये गये थे । इस अवसर पर अपने प.पू. भावी आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर आशीर्वाद दिये थे। सांख्ययोगी बहने धामो-धाम से आयी थी । गाँव के सभी हरिभक्तो के सहयोग से भव्य उत्सव मनाया गया । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

मांडल गाँव में भव्य पाटोत्सव तथा कथा

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवनी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मांडल गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ३१-०३-२०२३ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

पाटोत्सव के अवसर पर ता. २८-०३-२३ से ३०-३-२३ को रात्रि में कथा पारायण का प्रबन्ध किया गया था । जिस में शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा शा. स्वामी जनमंगलदासजीने लाभ दिये थे । पाटोत्सव के प्रमुख यजमान पद पर प.भ. लाभूबेन छगनभाई ठक्कर परिवारने लाभ उठाया था । इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी तथा कालुपुर मंदिर के ट्रस्टी ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी आकर आशीर्वाद दिये थे । आस-पडोस के गाँव के लोगो ने लाभ उठाया था । (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुर)

कोठंबा गाँव में भव्य पाटोत्सव

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवनी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा के १२८ वे पाटोत्सव प.भ. काछिया शैलेषभाई जयंतीलाल तथा प.भ. काछिया भाविक शैलेषभाई यजमान पद पर हुआ था । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से धर्मनंदनदासजी स्वामी, जगतप्रकाशदासजी स्वामी, हिंम्मतनगर से महंत प्रेमप्रकाशदासजी स्वामी तथा नरनारायणदासजी स्वामी तथा मुनि स्वामी सभी भक्तो को आशीर्वाद दिये थे । गांव के समस्त हरिभक्तो के साथ सहकार से भव्य पाटोत्सव मनाया गया था ।(स्वामी जगतप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम)

बालासिनोर गाँव में भव्य पाटोत्सव

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवकी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर

मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर को १८२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १९-३-२०२३ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया। जिस में जेतलपुरधाम से ब्र. पवित्रानंदजी, जनमंगल स्वामी, अखंड स्वामी और राम स्वामी पधारकर कथावार्ता का लाभ दिये थे। पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. काछिया गोविंदभाई मणीलाल तथा प.भ. काछिया गोविंदभाई वाडीलाल परिवार ने लाभ लिया था। गाँव के प्रत्येक हरिभक्तो के सहयोग से पाटोत्सव दिव्य रुप से मनाया गया था।(स्वामी जनमंगलदासजी - जेतलपुरधाम)

लुणावाडा मंदिर का १७५ वाँ शतामृत पाटोत्सव

सर्वावतारी आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवकी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से १६-२-२३ से ता. २०-२-२३ तक यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का १७५ वाँ शतामृत महोत्सव अच्छे तरह से मनाया गया।

इस अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा पारायण किया गया। जिसके वक्ता पद पर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथाकार पूज्य स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने कथामृत का लाभ दिये थे। धामो-धाम से संत आकर आशीर्वाद दिये थे । प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की मंदिर में आरती उतारकर सभी भक्तो को आशीर्वाद दिये थे। इस महोत्सव मे होमात्मक महापूजा, स.गु. महानुभावानंद स्वामी द्वारा दिये गये प्रसादी की श्रीकृष्ण लालजी महाराज का दिव्य अभिषेक छप्पन भोग अन्नकूट, नगरयात्रा आदि अनेक कार्यक्रम किये गये थे। शतामृत पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. श्री दिनेशभाई परसोतमभाई का. पटेल (ट्रस्टीश्री अहमदाबाद मंदिर) निरवभाई और दिव्येशभाई परिवार ने लाभ उठाया था। छोटे-बड़े प्रत्येक यजमानश्री तथा आस-पास के गाँव के भक्तो के सहयोग से महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था। (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

भावपुरा गाँव में १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवनी असीम कृपा से प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवम् स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन में १३-२-२३ से १५-२-२३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा का पंचदशकीय महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस महोत्सव के अवसर पर स.गु. श्री श्री निष्कुलानंद स्वामी रचित वचनविधि ग्रन्थ की कथा शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी के वक्तापद से कथामृत का रसपान कराये थे। धामो-धाम से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे। इस महोत्सव के कथा पारायण के यजमान प.भ. श्री परसोतमभाई त्रिभोवनदास पटेल वर्त. कल्पेशभाई घनश्यामभाई, पिन्टुभाई ने लाभ लिया था। छोटे-बड़े अनेक यजमानश्री और गाँव के हरिभक्तोने इस महोत्सव को उल्लासपूर्वक मनाये थे। (शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

कोटा (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर एवम् आरामगृह प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा, बड़े महाराजश्री तथा भविष्य के आचार्य श्री १०८ श्री वजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी के प्रेरणा एवम् शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी के सुंदर प्रबन्ध से राजस्थान के कोटा शहर में सुंदर रमणीय शांत क्षेत्र में श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत आरामगृह और नया भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माम पूर्ण होने पर फाल्गुन वद दशमी को १७-३-२०२३ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा उल्लासपूर्वक की गयी।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत का दशम स्कंध त्रिदिवसीय कथा स.गु. महंत शा. स्वा.

धर्मकिशोरदासजी गुरु स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (माणसा) के वक्ता पद से हिन्दी भाषा में की गयी ।

इस अवसर पर धामो-धाम से संत और मुख्य अतिथी के रुप में माननीय श्री ओमप्रकाश विरला (लोक सभा अध्यक्ष) स.गु. महंत शा. स्वा. निर्गुणदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (गांधीनगर), जे.पी. स्वामी आदि धामो-धाम से आये हुए थे । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) और स.गु. शा. स्वा. नारणमुनिदासजी (कोटा) ने किया था । इस भव्य संकुल का निर्माण और मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर हजारो हरिभक्त अनेक सेवा के यजमान बने थे ।(कोठारी स्वामी - कोटा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ६-४-२३ के दिन हनुमानजी का जन्मोत्सव का श्री हनुमानजी की पूजा करके फल का अन्नकूट रखकर आरती की गई थई । ता. १६-४-२३ को सत्संग सभा में माणसा मंदिर के महंत स्वामीने भगवान श्रीहरि के महिमा की बात बताये थे । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आज्ञा से श्री घनश्याम महिला मंडल द्वारा प्रत्येक मंगलवार को तथा दोनो एकादशी के दिन सुंदर सभा होती है । प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प्रति रविवार को बालमंडल और बालिका मंडल की सभा की जाती है । प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को खिचडी उत्सव होता है । पूरा प्रबन्ध श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा श्री घनश्याम महिला मंडल द्वारा किया जाता है ।(जयेशकुमार सुरानी)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

बलोल (आल) (स.गु. देवानंद स्वामी का जन्म स्थान) गाँव में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वाद तथा मूली मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी, महंत स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी और हजूरी पार्षद श्री वनराज भगत के प्रेरणा-मार्गदर्शन से बलोल बहनो का मंदिर में वर्षो तक सेवा देकर सत्संग को पोषण देकर श्री नरनारायणदेव - मूली श्री राधाकृष्णदेव की और धर्मकुल की निष्ठा दृढ किये । ऐसी अ.नि.पू. सांख्ययोगी अमरबा की स्मरण में बलोल महिला मंडल के सुंदर प्रबन्ध से ता. ११-४-२०२३ से १५-४-२०२३ तक श्री मद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. महंत शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (एफ्रोच मंदिर) के वक्तापद से की गयी । इस अवसर पर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. ११-४-२०२३ को पधारे थे । दोनो मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके सभा में बिराजमान होकर लोगो को आशीर्वाद दिये । इस अवसर पर सभी ग्रामवासीयोने सेवाक रके पू. अमरबा का संकल्प पूर्ण किये थे । धामोधाम से संत-सांख्ययोगी बहने और हरिभक्त आये थे ।(बूटिया रणछोडभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (प्राचीन टावर वाला)

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से हलवद श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्राचीन टावरवाला) का वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. २१-२-२३ से ता. २५-२-२३ तक पंचदिनात्मक श्री विदुरनीति ग्रन्थ की कथा पूजारी स्वामी भक्तिनंदनदासजी ने किया था । जिसके यजमान प.भ. घनश्यामलाल छगनलाल सोनी परिवारने लाभ लिये । यह मंदिर स.गु. महानुभावानंद स्वामीने बनवाया था । और मूर्ति की प्रतिष्ठा अपने आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने किया था । इस अवसर पर कथा, यज्ञ, महापूजा, अखंडधून, वचनामृत, शिक्षापत्री पूजन ठाकुरजी का अभिषेक आदि कार्यक्रम किया गया था । धामो-धाम से संत पधारे थे । सभा संचालन ब्रह्मदर्शन स्वामीने किया था । (अनिल दूधरेजिया)

ध्रांगध्रा बहनो के मंदिर का पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा हलवद रोड के उपर अपना श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत बहनो के मंदिर का तीसरा पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । जिस में देवो को अभिषेक अन्नकूट आरती और १२

घंटे की अखंडधून बहनोने किया था । जिस में सांख्ययोगी कंचनबा आदि सांख्ययोगी बहनोने सुंदर प्रबन्ध की थी । (अनिल दूधरेजिया)

रणजीतगढ गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) में मूर्ति प्रतिष्ठा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा हलवद मंदिर साराचार रास्ता श्रीजीस्वरुपदासजी की प्रेरणा से रणजीत गढ गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २६-३-२०२३ के दिन प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो से उल्लासपूर्वक पूर्ण किया गया ।

इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन महाग्रंथ का पंचदिवसीय पारायण शा. स्वामी व्रजवल्लभदासजी (मूली) महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (चराडवा) और शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी (मूली)ने कथा का लाभ दिये ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आकर ठाकुरजी की आरती करके बहनो को गुरु मंत्र दी थी । सभा का संचालन शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजीने किया था । धामो-धाम से संत-सांख्ययोगी बहने और हरिभक्त पधारे थे ।(अनिल दूधरेजिया)

समस्त सत्संग के लिये

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के स्वामी विश्वस्वरुपदासजी गुरु स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी ने त्यागी पंच की मीटिंग दि. २०-१२-२०२२ के प्रस्ताव के अनुसार अहमदाबाद देश में से निकाल दिया गया है । जिस कारण से ये श्री नरनारायणदेव देश के नागरिक नही है । उनके साथ कोई संत या सत्संगी किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं करे । जिस पर सभी हरिभक्त ध्यान दे । इससे सम्प्रदाय की मर्यादा और गरिमा का हनन हो रहा है । ऐसी शिकायत हरिभक्तो द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री मिलने पर पू. महाराजश्री त्यागी पंच पर ध्यान देते हुए । त्यागी पंच पू. महाराजश्री की सहमति से यह निर्णय लिया गया है ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पोष सुद-१ प.भ. शिवाली कनुभाई चौधरी (चराडा), प.भ. मंजुलाबेन नरसिंहभाई पटेल (कात्रोडी), प.भ. प्रदिपाबेन - अरूणाबेन (अहमदाबाद). **पोष सुद-२/३** प.भ. देवु भगत जयशियाराम (राणाकंडोरणा), प.भ. डॉ. कुलभूषण के. पटेल (गांधीनगर), प.भ. प्रतिकभाई घनश्यामभाई सुतरीया (जाळीला), अ.नि.प.भ. भावनाबेन पंकजभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भोगीलाल आर. पंड्या (अहमदाबाद), प.भ. प्रदिपाबेन तथा अरूणाबेन (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. रमणभाई रणछोडभाई पटेल (बायड), प.भ. पटेल बाबुभाई शिवरामदास (कल्याणपुरा), प.भ. एक हरिभक्त (मुंबई), प.भ. उन्नतिबेन रूषिकुमार चौधरी (अहमदाबाद). **पोष सुद-४** अ.नि.प.भ. चौधरी शांताबाना स्मरणार्थे (बालवा), प.भ. पटेल कनुभाई त्रिभोवनदास (जाकासण), प.भ. पटेल प्रदिपकुमार रमेशभाई (उंझा), प.भ. हरिदासभाई तथा मंदस्मिताबेन (अहमदाबाद), प.भ. चौधरी वेलजीभाई लालाभाई (बालवा). **पोष सुद-५** प.भ. प्रदिपाबेन तथा अरूणाबेन (अहमदाबाद), प.भ. बाबुभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. रूक्ष्मणीबेन कांतिभाई पटेल (धनसुरा), प.भ. रविकुमार हंसराजभाई (अहमदाबाद), प.भ. जयश्रीबेन रमणीकलाल (कोल्हापुर). **पोष सुद-६** प.भ. क्रेयाबेन लांणणेचा, अ.नि. प.भ. रूक्ष्मीबेन प्रेमजी वाघजीयाणी (नारणपर-कच्छ), अ.नि. प.भ. सिल्की बिंदेश पटेल (गांधीनगर). **पोष सुद-७** प.भ. जयंतभाई मीस्त्री (अहमदाबाद). **पोष सुद-८** प.भ. नटुभाई काळाभाई चोवटीया (सुरत). **पोष सुद-९** प.भ. पोपटलाल बेचरभाई पटेल (उंझा), प.भ. हर्षदभाई लालभाई पटेल (शिलज), प.भ. विपुल सूर्यकांतभाई सोनी (अहमदाबाद). **पोष सुद-१०** प.भ. डाह्याभाई मणीभाई पटेल (बायड), प.भ. रूपाबेन दिपकभाई शाह (अहमदाबाद), प.भ. ठक्कर परेशभाई चंदुलाल, अ.नि.प.भ. शिवजीभाई धनजीभाई वेकरीया (मांडवी-कच्छ), श्री स्वामिनारायण महिला मंडळ (कारीयाणी), प.भ. सोडवडीया हितेषकुमार कांतिलाल (अहमदाबाद), प.भ. चौधरी जीवणभाई महोतभाई (बालवा), प.भ. भट्ट भावेशभाई चंद्रकांतभाई (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. पटेल भरतकुमार काळाभाई (वावोल), प.भ. वाघेला प्रविणसिंह रामसिंहजी (अहमदाबाद). **पोष सुद-११** अ.नि.प.भ. वालबाई मावजी वेकरीया (बळदीया-कच्छ), प.भ. भट्ट

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पारूलबेन भावेशभाई (अहमदाबाद). **पोष सुद-१२** प.भ. हिराणी राजेश मनजी (कोडकी-कच्छ), अ.नि.प.भ. पटेल घनश्यामलाल जेठालाल (कलोल), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. धनजीभाई खुशालभाई पटेल (मणीपुरा), प.भ. ठक्कर रिध्धिबेन पंकजभाई (अहमदाबाद), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. वरसाणी कुवरबेन नानजी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. मेधबाई (कुंदनपुर-कच्छ), प.भ. पटेल हर्षदभाई (अहमदाबाद). **पोष सुद-१३** अ.नि.प.भ. कलावतीबेन मनहरलाल (वडोदरा), अ.नि.प.भ. वेकरीया रामजी हरजी (मांडवी-कच्छ). **पोष सुद-१४** प.भ. आचार्य हर्षाबेन सूर्यकांतभाई (अहमदाबाद), प.भ. राठोड फाल्गुनीबेन (अहमदाबाद). **पोष सुद-१५** प.भ. पटेल अनाया चेतनभाई (अहमदाबाद).

पोष वद-१ सांख्ययोगी भारतीबा, सांख्ययोगी चंपाबा (कलाली), प.भ. पटेल रोनक रमेशभाई, प.भ. पर्व मोढ (अहमदाबाद), प.भ. झिंझुवाडीया क्रिश भाविनभाई (हळवद). **पोष वद-२** महिला मंडळ (धोळका), अ.नि.प.भ. पटेल लालजीभाई चंदुलाल (कोटेश्वर), अ.नि. स.गु. कोठारी स्वामी धर्मजीवनदासजी (बोटाद गुरुकुळ), अ.नि.प.भ. सोनी हरिलाल विठ्ठलदास (अहमदाबाद), प.भ. भावसार भारतीबेन भरतकुमार (अहमदाबाद), प.भ. त्राडा कांतिभाई भीखाभाई (अहमदाबाद), प.भ. देवाणी अक्षय (अहमदाबाद), प.भ. पटेल शकरीबेन प्रहलादभाई (पलीयड), अ.नि. जगजीवनभाई गोरधनभाई (विसतपुरा), प.भ. कांताबेन कृष्णभाई (नारदीपुर), प.भ. पटेल राजेशकुमार जयंतीलाल (मोटेरा), प.भ. पटेल गोविंदभाई मणीलाल (वडु), प.भ. मालतीबेन सुरेन्द्रकुमार (सोजा). **पोष वद-३** अ.नि.प.भ. पटेल गांडाभाई केशवलाल (वडु), प.भ. छायाबेन कमलेशकुमार (करमसद). **पोष वद-४** अ.नि.प.भ. घनश्यामभाई खोडीदास (वडु), प.भ. ईश्वरभाई दशरथभाई (साकोदरा), देवकृपा एजन्सी (अहमदाबाद). **पोष वद-५** अ.नि. पटेल मनीषभाई (सायरा), प.भ. पटेल ललीताबेन नारणभाई (भाटेरा), प.भ. पटेल दर्पित उमेशभाई (कंजरीकंपा), प.भ. सी.के. (पूजापावाळा) (चांदखेडा). **पोष वद-६** प.भ. अमित गज्जर, प.भ. भट्ट भार्गव हरिदत (न्युजर्सी), प.भ. पटेल प्रविणकुमार त्रिभोवनदास. **पोष वद-७** प.भ. हालाई रतनशीभाई मेघजी (गोधरा-कच्छ), अ.नि.प.भ. भरतभाई हरगोविंददास (अहमदाबाद), प.भ. हिरपरा वल्लभभाई लक्ष्मणभाई (जसदण), प.भ. पटेल हिरलबेन अमरकुमार (अहमदाबाद), प.भ. पूजारा नितिनभाई चतुरभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल माधवदास मगनदास (चडासणा), प.भ. पटेल कांताबेन बाबुलाल (करजीसण), प.भ. पटेल सुरेशकुमार कांतिलाल (मोखासण), प.भ. पटेल तेजलबेन मनीषकुमार (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. पिंडोरीया लक्ष्मण वाघजी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. पिंडोरीया पुरबाई लक्ष्मण (सामत्रा-कच्छ), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद). **पोष वद-८** प.भ. पटेल मनसुखभाई रामाभाई (रायणीया), अ.नि.प.भ. कमुबेन काळाभाई (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. चंद्रेशभाई वघासीया (राजकोट), प.भ. पटेल राजेन्द्र रमणलाल (अहमदाबाद), प.भ. मांगरोळीया रक्षित मनसुखभाई (अमरेली). **पोष वद-९** श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद). **पोष वद-१०** प.भ. पटेल मंजुलाबेन ईन्दुभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल सुरेशभाई नटवरलाल (कलोल). **पोष वद-१२** प.भ. पाठक मिशा तथा मिष्टी (अहमदाबाद), प.भ. पटेल जीग्नेशभाई अंबालाल (मोटेरा), प.भ. पटेल सविताबेन चिमनलाल (वडोदरा), प.भ. रादडीया लाभुबेन केशुभाई (बापुनगर), प.भ. हंसाबेन नटुभाई (लसुन्द्रा), प.भ. अ.नि. पटेल गंगाबेन अंबालाल (धमासणा), प.भ. पटेल मीनाबेन पंकजभाई (हंसपुरा), प.भ. अंकितभाई वसंतभाई (वेडा), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ). **पोष वद-१४** अ.नि.प.भ. पटेल श्लोक रमेशभाई (उनावा). **पोष वद-३०** अ.नि.प.भ. जेसाणी रामबाई करशनभाई (बळदीया-कच्छ), प.भ. गजेरा हरिकृष्णभाई कपीलभाई (सोला), अ.नि. पटेल सविताबेन लक्ष्मीदास (भीलवाडा), प.भ. अभिभाई दिलीपभाई भीमाणी (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. वरसाणी करशन लक्ष्मण (गोधरा-कच्छ).

महा सुद-१ प.भ. पटेल कृष्णकांत कांतिलाल (अहमदाबाद), प.भ. परमार उषाबेन सुरेन्द्रभाई, प.भ. ठक्कर वासुदेवभाई (अहमदाबाद), प.भ. पांभर राजेश मनुभाई (बोपल), अ.नि.प.भ. वालाणी वालबाई खीमजी (सुखपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. नर्मदाबेन कानजीभाई घेलाभाई (गवाडा), अ.नि.प.भ. नर्मदाबेन कानजीभाई घेलाभाई (गवाडा). **महा सुद-२** प.भ. सोनी मधुसुदनभाई चेतनाबेन. **महा सुद-३** प.भ. पलबेन हेमंतकुमार, प.भ. पटेल सविताबेन धुळाभाई (राणीप), अ.नि.प.भ. लक्ष्मीदासकाका तथा धनलक्ष्मीबेन. **महा सुद-४** प.भ. पटेल जयेश प्रभुदास (गोरज), प.भ. पटेल विनुभाई मूळजीभाई (गोठीब-संतरामपुर). **महा सुद-५** प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद, प.भ. गांधी कनुभाई खीमचंद (अहमदाबाद), प.भ. पटेल माणेकलाल शंकरदास (मोखासण), प.भ. श्रीवास्तव गीरीशचंद्र एस. (अहमदाबाद). **महा सुद-६** प.भ. पटेल सविताबेन रामदास मगनदास (धुमासण), प.भ. पटेल दिपकभाई चिमनभाई (बायड), प.भ. पटेल रेखाबेन के. पटेल (बोपल). **महा सुद-७** प.भ. त्रिवेदी कौशिकभाई, प.भ. पटेल कहान जयमिनभाई. **महा सुद-८** अ.नि.प.भ.

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

ठक्कर मधुबेन यशवंतलाल (अहमदाबाद), प.भ. टांक नर्मदाबेन हरिशभाई (अहमदाबाद). **महा सुद-९** गं.स्व. शांताबेन नटवरलाल (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन विष्णुभाई (मारूसणा), प.भ. हालाई वसंत मनजी (दहींसरा-कच्छ). **महा सुद-१०** प.भ. कानुगा पूजा समीर (अहमदाबाद). **महा सुद-१२** प.भ. सावलीया दिपकबेन रजनीभाई (पीठवडी), प.भ. भुडीया खीमजी शामजी (फोटडी-कच्छ), प.भ. पटेल मिवान देवव्रत, प.भ. भावसार शैलेषभाई (सरसपुर), प.भ. पटेल हार्दिक, प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ). **महा सुद-१३** प.भ. हिराणी मेघबाई वालजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. कापडीया संजयकुमार लालजीभाई (निकोल), प.भ. जोशी वंश परेशभाई (अहमदाबाद), प.भ. घोघाणी गोविंद नानजीभाई (चंद्रपुर - महाराष्ट्र), प.भ. हिराणी भाणभाई कानजी (फोटडी-कच्छ). **महा सुद-१४** प.भ. पटेल हिराबेन कांतिलाल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. दशरथलाल ईश्वरभाई (माणसा), प.भ. भुडीया आशाबेन गोविंद (फोटडी-कच्छ), प.भ. पटेल कमळाबेन छगनभाई (आकरूंद), प.भ. पटेल हर्ष सुरेशकुमार (गांधीनगर). **महा सुद-१५** प.भ. पटेल निर्भय रमेशभाई (पलीयड), प.भ. राबडीया वेलजी भीमजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. पटेल बाबुभाई दानाभाई (भिचोड), प.भ. पटेल धीमंतभाई किरीटभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल ठाकोरभाई चंदुभाई (वडोदरा), अ.नि.प.भ. ठक्कर धीरजलाल नानालाल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल योगेशभाई (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन नटवरभाई (अहमदाबाद).

महा वद-१ प.भ. पटेल केतनभाई गीरीशभाई (अहमदाबाद), प.भ. सावलीया गोपी मुकुन्दभाई (आंबा), प.भ. लींबाणी हरिशभाई नानजीभाई (पूना), प.भ. पटेल कांताबेन अंबालाल (झुंडाल), सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा (मोरबी). **महा वद-२** प.भ. अमीबेन अरविंदभाई (अहमदाबाद). **महा वद-३** प.भ. विठ्ठलाणी हरगोविंदभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल त्रिश रवि प्रहलादभाई (माणसा), प.भ. पटेल शनि डेनील (पलीयड), अ.नि.प.भ. कुसुमबेन जयंतीभाई. **महा वद-४** प.भ. पटेल कनुभाई शीवाभाई (कुंडाल), प.भ. पंचाल गीरीशभाई कनैयालाल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. चोकसी जबुबेन नरसिंहदास, प.भ. पटेल मित शैलेषभाई (चांदखेडा). **महा वद-५** प.भ. पटेल भोळाभाई मोतीदास (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. हिराणी करशनभाई मनजीभाई (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. पटेल गोविंदभाई जोईतारामभाई (जमीयतपुरा). **महा वद-६** प.भ. राणा राजेन्द्रसिंह वाघुभा (गांधीनगर), प.भ. पटेल भावेशभाई बबाभाई (उनावा), अ.नि.प.भ. पटेल कमळाबेन कुवरजीभाई, अ.नि.प.भ. मनसुखभाई मूळजीभाई (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. नर्मदाबेन कानजीभाई (गवाडा), प.भ. दिलीपभाई मणीलाल (नवा निकोल). **महा वद-७** अ.नि.प.भ. चौधरी मादेवभाई रामभाई (बालवा), अ.नि.प.भ. पटेल जोईताराम त्रिभोवनदास (गांधीनगर), प.भ. दवे भगवतप्रसाद चिमनलाल (कालुपुर). **महा वद-८** प.भ. पटेल पार्थ भाईलालभाई (अहमदाबाद). **महा वद-९/१०** अ.नि. चौधरी मेनाबेन रणछोडभाई (बालवा). **महा वद-१२** प.भ. डुंगराणी कानजीभाई मोतीभाई (उगामेडी), प.भ. चौधरी तुषार रणछोडभाई (प्रतापपुरा), प.भ. पार्थ गोविंदभाई (बालवा), प.भ. वेलबाई खीमजी कानजी (भारासर-कच्छ), प.भ. वेलबाई खीमजी कानजी (भारासर-कच्छ). **महा वद-१३** (महाशिवरात्री) प.भ. ब्रह्मभट्ट जय काजल. **महा वद-१४** प.भ. पटेल भावनाबेन मनीषभाई (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. रावल हरिकृष्ण शिवशंकर (अहमदाबाद), प.भ. पटेल अंबालाल कोदरदास (गवाडा), प.भ. सुहागीया अशोकभाई गोविंदभाई (अहमदाबाद), प.भ. काछडीया काळुभाई बाबुभाई (अहमदाबाद), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारणपर-कच्छ), श्री नरनारायणदेव (भुज-कच्छ), अ.नि.प.भ. पडशाळा परसोतमभाई नानजीभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल प्रियंका निर्सगकुमार (मोखासण), प.भ. पटेल भुपेन्द्रभाई मंगळभाई (सायरा), प.भ. पटेल कनुभाई शंकरभाई (सायरा), प.भ. पटेल वानि विहारभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल वानि विहारभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल निकुंज महेन्द्रभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल भावनाबेन दिनेशकुमार (सैजपुर). **महा वद-३०** श्री स्वामिनारायण मंदिर बहेनोका (राजपुर), प.भ. डुंगराणी कानजीभाई मोतीभाई (उगामेडी), अ.नि.प.भ. हिराबेन नाथाभाई (वासणा), अ.नि.प.भ. सांखलाणी मावजीभाई खेताभाई (नेत्रा-कच्छ).

अंक न मिलने की फरियाद : संपर्क : प.भ. गोरधनभाई सीतापरा - मो. : ८७८०४३४९४१

श्री नरनारायणदेव के धजा के यजमानश्री : नीलकंठ एन्ड हरिकृष्ण - उनावा

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।



रामपरा (मूलीवेड़ा) गाँव में बहनों के मंदिर में अन्नकूट आरती उतारते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



धनोरा (धाम) गाँव में कथा पाराकण के अवसर पर सभा को
आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री





कोटा (राजस्थान) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. लालजी महाराजश्री और सभा में दर्शन देते
प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ अतिथिश्री ओम बिरला (लोक सभा के अध्यक्ष)



उनवा गाँव में मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की
अन्नकूट आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

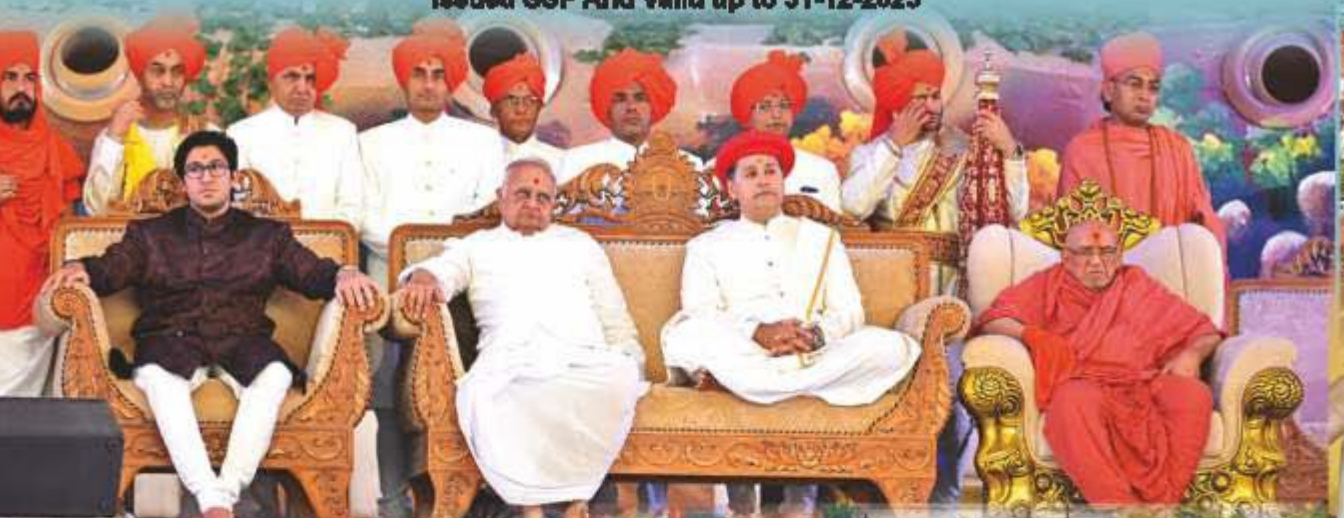


खेलमाल गाँव में कथा के अवसर पर ठाकुरजी की
आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



कुशलपरा गाँव में कथा के अवसर पर सभा में
आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 561/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023





પૂજ્ય શ્રી નરસાણ દેવ પ્રતિષ્ઠાબ્દી મહોત્સવ









Prafull Kharasani@gmail.com